RNI Reg. No. : HARHIN/2017/72144

जुलाई से सितंबर २०२२
अंक - ७

यात्रा आमंत्रण

भारत की एकमात्र हिंदी पर्यटन पत्रिका

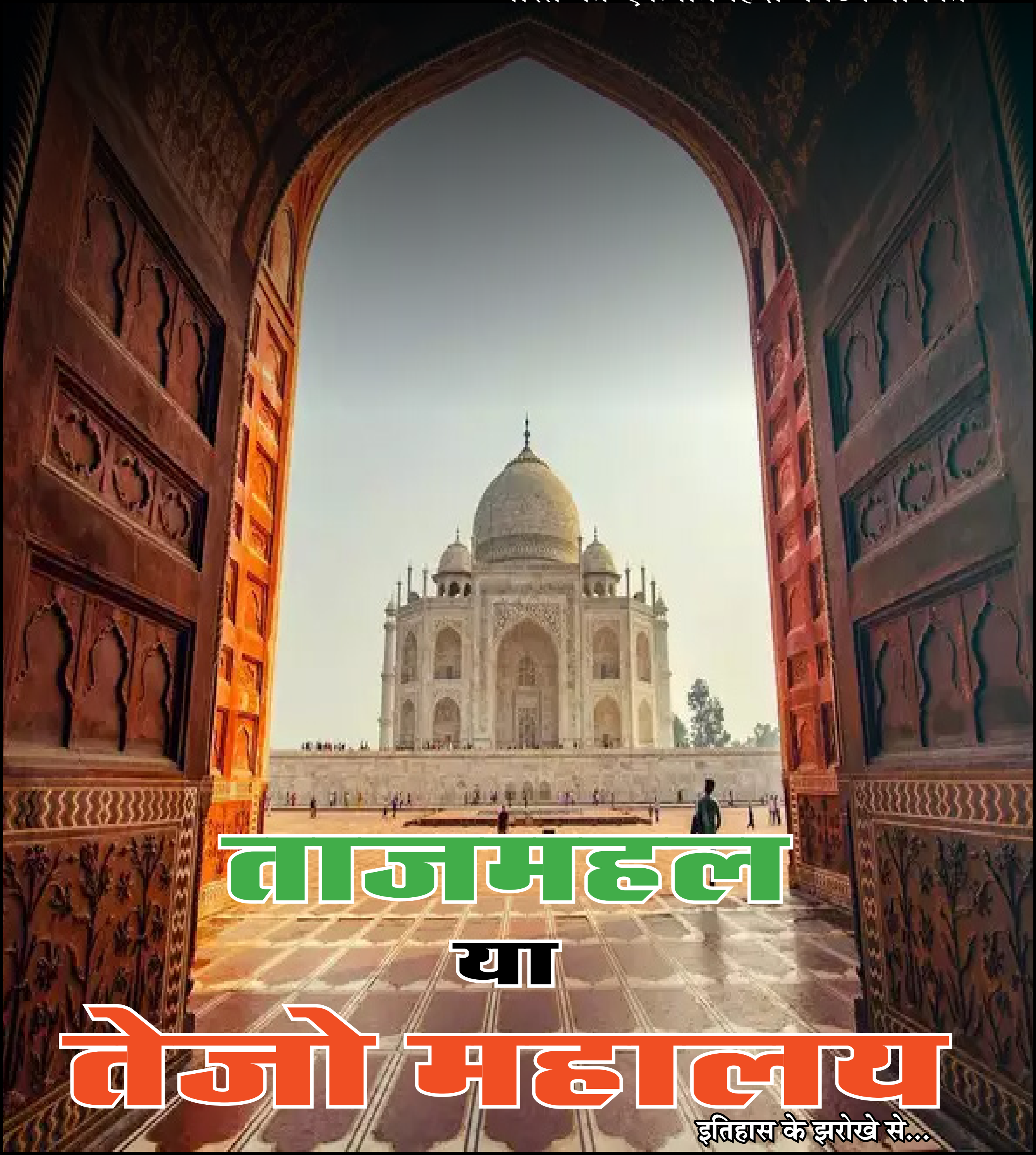

THE EXODUS CONTINUES
Three days after the government started trains with much fanfare to repatriate migrants, facts on the ground paint a picture of official apathy, helplessness and a throbbing anger among those walking
REPORTAGE: RANJEET JADHAV, DIWAKAR SHARMA AND FAIZAN KHAN. PHOTOS: HANIF PATEL, RANJEET JADHAV
'I could just die, right?'
'No one cares about the poor. That's why we have to walk hundreds of kilometres. We don't have money for food or tickets'
Rajesh Pawar, walking to Gondia district
'Have no mo
'We labourers mean nothing to the govt. Otherwise, we too would have been showered with flower petals from a helicopter. We are paying for being poor'
Ramlal, a migrant
'We just want to go home'
Tragedy and Shame
CM suspends SHOs after trucks carrying migrants collide in UP; DGP admits numbers on move "huge"
Among those in truck: Some who failed to get on train, workers denied wages
Can't help but cry at migrant plight, says Madras HC, seeks report
GOVT CAN HIRE 6000 BUSES & 30 TRAINS FOR MODI'S RALLY BUT NO TRANSPORT TO MIGRANT WORKERS
000 buses and 30 trains
oked for Modi's rally
देश विभाजन के जख्म कुरेदती हैं मजदूरों के पलायन की तस्वीरें
तस्वीर ब्लैक एंड व्हाइट से कलरफुल हो गई, लेकिन
पलायन की त्रासदी के रंग 73 साल में भी नहीं बदले
1947
दो तस्वीरों में 73 साल का फासला है, मगर विस्थापन का दर्द और पेट पालने की मजबूरी दोनों तस्वीरों में एक सी है... पहली तस्वीर देश के विभाजन तो दूसरी कोरोना काल की है...
कुएं से निकले 9 प्रवासी श्रमिकों के शव, 2 बिहार और 7 पश्चिम बंगाल के
अपने घर जाना चाहते थे, लेकिन...
Khogen Singh
@khogensingh1
A penniless migrant worker breaks down as he talks on his mobile phone, a photo that should haunt all Indians

संपादक की कलम से

हम भूले तो हमारी भूल और याद रखे तो हमारी जीत

आठ साल के निरंतर जीत और सत्ता पर काबिज होने के बाद हुकमरान इन तस्वीरों को भी संज्ञान में ले और देश याद रखे। चार घंटे की तालाबंदी के घोषणा के साथ देश में पद यात्रा के माध्यम से एक करोड़ मजदूरों का पलायन प्रारंभ हुआ और हजारो घर पहुंचने से पहले ही अपने प्राण त्याग दिए। कठोर से कठोर निरंकुश तानशाह के काल में भी इस तरह के दर्दनाक तस्वीरें नहीं देखी गयी। हम भूले तो क्यों और याद न दिलाये तो क्यों। परिस्थिति तभी बदलेगा जब हम बदलेंगे। कहने भर से काम नहीं चलेगा की हमने ८० करोड़ को पांच किलो चावल दिया है। पांच किलो चावल पर जीवन चल जाये तो यह मंत्री लोग पेंशन न ले, गाड़ी बंगला न ले, पांच किलो चावल खाये और देश की सेवा करे। एक गरीब को क्यों कहते है की तुम अपने लिए पांच किलो चावल लो और हम सत्ता का सुख भोगेंगे। तुम पैदल घर जाओ और हम आलीशान वातानुकुलित दफ्तरों में बैठ कर तुम्हारे भाग्य विधाता बनेगे। हम दो साल तुम्हारे लिए तरक्की के सारे रास्ते बंद करेंगे और खुद चुनाव में बड़ी बेशर्मी से वोट की भीख भी मांगेंगे। आठ साल में क्या किया देश देख भी रहा है और समझ भी रहा है। १२ करोड़ की बेरोजगारी में कितने मंत्री और नौकरशाह संजीदा दिखे। यह कौन सा देश है जहा दो व्यक्ति के हाथो में सब बेचने की सनक सवार हो गयी है। यह कौन सा देश है जहा गरीबी मिटाने के नाम पर वोट मांगे जाते है और बाद में गरीब को भूखा मरने छोड़ दिया जाता है। सामाजिक मुद्दों से परे इस बार पर्यटन पर मैंने दृष्टि केंद्रित की है और धीरे से श्री लंका का हाल भी सुनाया है ताकि हम अपने आपको अभी से सजग कर सके।

विश्वदीप रॉय चौधुरी
मुख्य संपादक

संपादकीय टीम

› मुख्य संपादक
- बिस्वदीप रॉयचौधरी

› महाराष्ट्र ब्यूरो प्रमुख
- नितिन कलजे

› माननीय सलाहकार
- गौर कांजीलाल

› कानूनी सलाह और
उत्तर प्रदेश प्रमुख - प्रताप सिंह

› संवाददाता - सुहासिनी साकिर

› जनसंपर्क अधिकारी - मोहन जोशी

› कॉपी संपादन - यज्ञ भारद्वाज

› ग्राफिक डिजाइनर - पूजा तिवारी पांडेय

› प्रकाशन सलाहकार - शंकर कोरेंगा

› विडियो संपादक - कपिल अत्री

› परामर्श संपादक - मोहम्मद इस्माइल

› मुंबई प्रमुख - नरेंद्र पाटिल

विज्ञापन के लिए

Whats app करें 9971229644

Youlube/Asatya Bharat

Download E-Copy
From- www.yatramantran.com

हमें मेल करें या अपना नाम हमारी फ्री सर्कलेशन सूची में शामिल करें / प्रेस विज्ञप्ति यहां भेजें

yatraamantran@gmail.com

प्रकाशक का पता;
दुकान नंबर बी 1, प्रिविया मॉल ,
पीसीएमसी के पास, आरटीओ, सेक्टर 6,
मोशी प्राधिकरण, पुणे 411062

ताजमहल या तेजो महालय

जो बाते हर कही चर्चा में है

वर्ष 2018 -2019 में ताज महल को देखने पूरी दुनिया से तकरीबन 70 लाख 90 हजार पर्यटक आये थे और भारत सरकार को 86 करोड़ 46 लाख की आमदनी हुई। पर विगत दो वर्षो में कोरोना के कारण पर्यटन ने अपना सबसे बुरा वक्त देखा पर इस बीच ताज महल पर तेजो महालय होने का विवाद भी सामने आया।

अब मुद्दा ये है की ताज महल का वाकई नाम तेजो महालय हुआ करता था या वहाँ पर ताज महल बनने से पहले शिव मंदिर हुआ करता था, जिससे ताज महल का नाम बदल के तेजो महालय हो जाये।

इन सभी बातो से जुड़ने के लिए हमको 1632 में जाना पड़ेगा और समझना होगा की आखिरकार क्या हुआ था।

ताजमहल, जिसे 1632 में सम्राट शाहजहाँ ने अपनी पत्नी मुमताज महल की याद में बनवाया था, को शुरू में 'रोजा-ए-मुनव्वर' नाम दिया गया था, जिसका अर्थ है अनोखी इमारत, लेकिन बाद में शाहजहाँ ने इसका नाम बदलकर ताजमहल रख दिया। बहुत कम लोग जानते हैं कि दिसंबर 1631 में बुरहानपुर से लाए जाने के बाद मुमताज महल को ताजमहल के बगीचे के एक कोने में दफना दिया गया था।

कब्र का निचला हिस्सा अभी भी उसे लेने के लिए तैयार नहीं था। बेशक ऊपरी हिस्से को बनने में अधिक समय लगा। इस बाड़े में अर्थी को एक बार फिर अस्थायी रूप से दफनाया गया। चार दीवारों ने यह सुनिश्चित किया कि मृत्यु में भी उसका पर्दा बना रहे।

अब प्रश्न यह है की जिस जमीन पर आज ताजमहल है, क्या वहाँ पहले कोई मंदिर हुआ करता था?

शाहजहाँ ने यह जमीन समकालीन राजा जय सिंह से ली थी और इस जमीन के बदले आगरा की चार हवेलिया आदान प्रदान की गयी थी। विरासत और इतिहास को लेकर विवाद आज के समय में कोई नई बात नहीं है। ताजमहल के मंदिर होने का दावा हम लंबे समय से सुनते आ रहे हैं। जबकि आप में से अधिकांश लोग सोच सकते हैं कि तेजो महालय का यह दावा हाल ही में दक्षिणपंथी रणनीति है, पर वास्तव में ऐसा नहीं है। साम्प्रदायिक घृणा और ऐतिहासिक गलत सूचना के लगभग सभी उदाहरणों की तरह, यह भी अंग्रेजों के समय से पता लगाया जा सकता है।

19वीं शताब्दी के अंत में एक अफवाह का उदय हुआ कि लॉर्ड विलियम बेंटिक कलकत्ता में एक नया निवास बनाने के लिए ताजमहल को बेचना चाह रहे थे, जो ब्रिटिश शासन की तत्कालीन राजधानी थी। जबकि इस अफवाह की रिपोर्ट करने वाले अधिकांश स्रोतों ने लिखा है कि इतनी बड़ी राशि के साथ खरीदार की अनुपस्थिति के कारण सौदा रद्द कर दिया गया था, फैनी पार्क्स ने अपनी पत्रिका में एक संभावित खरीदार के बारे में लिखा था, जो ताज खरीदना चाहता था और उसके स्थान पर एक मंदिर का निर्माण करवाता। इस तरह शुरू होती है मंदिर और ताजमहल की अफवाह। इतिहासकार पर्सीवल स्पीयर ने बाद में अपनी एक पत्रिका में इस अफवाह का खंडन किया और इसे बाजार गपशप का एक आधारहीन उदाहरण बताया, जो भारत के बारे में अधिकांश यूरोपीय पत्रिकाओं की खबर थी।

इस उदाहरण को उजागर करने के पीछे मेरा उद्देश्य विदेशी यात्रियों द्वारा लिखे गए मध्यकालीन भारत के बारे में इस तरह के इतिहास में पाए जाने वाले अप्रमाणित सामग्री को उजागर करना है।

काफी दिलचस्प बात यह है की जब से यह सवाल उठने लगा तब से पर्यटकों में

इतिहास के आईने से

भानु प्रताप सिंह

संस्थापक अग्रौरहम, स्टोरी राइटर, ब्लॉगर

ताज का इतिहास जानने को लेकर दिलचस्पी बढ़ गयी है। सभी नागरिक जानना चाहते है कि सच्चाई क्या है।

इन सवालो को अगर हम आगरा के लोगों से पूछते है तो यहाँ कुछ तो जानकारी का आभाव है तो वही कुछ जानना नही चाहते है। पर आगरा आने वाला हर पर्यटक के मन में इस बात की जिज्ञासा है।

पीएन ओक की किताब 'द ताजमहल इज ए टेंपल पैलेस' क्या कहता है ?

ताज महल का प्रवेश द्वार दक्षिण की ओर है। यदि यह एक मुस्लिम इमारत होती तो इसका मुख पश्चिम की ओर होना चाहिए था।

ताजमहल संस्कृत शब्द तेजो महा आलय का भ्रष्ट रूप है जिसका अर्थ है देदीप्यमान मंदिर। ताज महल सात मंजिला है। उनमें से छह मुहरबंद हैं और बाकी आम जनमानस के लिए वर्जित हैं। ताजमहल का गुंबद एक गैर जंग लगने वाले आठ धातु से बना है जिस पर एक त्रिशूल शिखर है। ऊपरी भाग में देखा जाने वाला सुडौल शाफ्ट भगवान शिव के माथे पर अर्धचंद्र का प्रतिनिधित्व करता है।

हिंदू शिव चिह्न दो कक्षों में एक के ऊपर एक में प्रतिष्ठित हैं। इसलिए शाहजहाँ को मुमताज के नाम पर दो कब्रें खड़ी करनी पड़ीं - एक मार्बेल बेसमेंट में और दूसरी भूतल पर, दोनों शिव प्रतीकों को अपवित्र करने और सार्वजनिक दृश्य से छिपाने के लिए। ताजमहल के मार्बेल प्लेटफॉर्म के नीचे गुप्त

मंजिल में 22 बंद कमरों में से एक की छत पर एक गूढ़ हिंदू डिजाइन चित्रित किया गया है। इसका हिंदू नाम रंगावली है। मुमताज की तथाकथित कब्र दो लाल पत्थर की मंजिल के ऊपर है। इससे यह संदेह पैदा होता है कि मुमताज को ताजमहल में बिल्कुल भी नहीं दफनाया गया है क्योंकि समुद्र तल से दो मंजिल ऊपर एक पत्थर के आधार पर एक लाश को कैसे दफनाया जा सकता है।

अगर शाहजहाँ ने ताजमहल को मकबरे के रूप में बनवाया था तो 22 कमरों का क्या उद्देश्य था? और उन्हें क्यों बंद रखा जाता है।

मुमताज के वैवाहिक जीवन के 18 साल के दौरान उनके 14 बच्चे हुए, जिनमें से सात बच्चे जीवित रहे। इसका मतलब यह हुआ कि एक भी साल वह गर्भधारण से मुक्त नहीं रही। आखिरी डिलीवरी के तुरंत बाद मुमताज की मौत हो गई। तब वह केवल 37 वर्ष की थीं। चूंकि उसकी मृत्यु बुरहानपुर में हुई थी, इसलिए उसके शव को वहीं दफनाया गया था।

इस तरह के सभी विचार साबित करते हैं कि उपरोक्त भवन राजा परमदीदेव के शासन काल में शाहजहां से 500 साल पहले बनाया गया था, जैसा कि पहले अध्याय में उद्धृत संस्कृत शिलालेख में उल्लेख किया गया है।

यकीन से परे बुरहानपुर की कहानी

मुमताज ने एक लड़की को अपने चौदहवां प्रसव में जन्म दिया और इसके बाद अधिक खून बहने से उसकी मृत्यु हो गयी थी। इसके बाद मुमताज को बुरहानपुर के एक बाग में दफना दिया गया और छह महीने तक उसके कब्र पर मौलाना और पंडित दोनों आत्मा की शांति के लिए पाठ करते रहें। पर इसके बाद मुमताज के आखरी ख्वाहिश को पूरा करने हेतु , मुमताज के कब्र को एक विशाल शौक यात्रा के साथ आगरा के यमुना नदी तक लाया गया और नदी के तट पर बाईस साल तक रखा गया, जब तक ताजमहल बन नहीं गया। उस समय शाहजहाँ ने इस शौक यात्रा में आठ करोड़ खर्च किये। अब सवाल उठता है की बुरहानपुर में ही ताजमहल क्यों नहीं बनाया गया। तो जवाब दिया जाता है क्युकी बुरहानपुर के मिटटी में दीमक है और ईमारत के संरचना लिए सही नहीं है। बता दे की शाहजहां इस समय तक दीवालिया हो चूका था और उस समय उसके पास अपने सैनिको और दुसरे दरबारियों के वेतन का पैसा तक नहीं था। इतिहास बताता है कि शाहजहां के राज में भारत में भुखमरी और आर्थिक दिवालिएपन की स्थिति थी। तो सवाल जो पूछे जाने चाहिए...

पहला : एक बार जिसको कब्र में दफना दिया गया, उसको वापस दुसरे जगह स्थानांतरित किया जा सकता है क्या?

दूसरा : शाहजहां का खजाना खाली था तो ताज महल बनवाने के लिए कहाँ से धन आया?

इस कहानी के अनुसार बाइस साल बाद ताजमहल बनके तैयार हुआ और इसके चार साल बाद शाहजहाँ की मौत हो गयी।

मालद्वीप का समुद्री जीवन
दिलकश और रूहानियत से भरी हुई है

दुनिया के कुछ बेहतरीन समुद्र तटों में से एक मालदीव है, जो बेजोड़ विलासिता और सफेद रेतीले समुद्र तटों का विहंगम दृश्य प्रदान करता है। आनंदित नीले लैगून और प्रवाल भित्तियाँ, अपने आप में गोपनीयता प्रदान करते हैं।

एक सुंदर, अछूती चट्टान से घिरा और सबसे गहरे और अछूते एटोल में से एक पर स्थित, मूंगा की 250 से अधिक प्रजातियों और समुद्री जीवन की 1,200 प्रजातियों के साथ, फाल्हुमाफुशी और धीगुरा अनुभवी गोताखोरों के लिए जरूरी रिसॉर्ट हैं। यहां का समुद्री पानी कठोर और नरम मूंगे, स्पंज, समुद्री पंखे, ट्रिगर मछली, तोता मछली, फ्यूसिलियर, टूना, कछुए और बाराकुडा का घर है। ग्रे रीफ शार्क, व्हाइट और ब्लैक टिप रीफ शार्क, नर्स शार्क, लेपर्ड शार्क, ईगल रे और स्टिंग्रे सहित शार्क की कई प्रजातियां भी है।

यहां पर दुनिया के कुछ बेहतरीन और सबसे दूरस्थ डाइविंग स्पॉट का अपना PADI 5 डाइव सेंटर है और यह असाधारण डाइव साइटों से घिरा हुआ है। दुनिया में कुछ बेहतरीन डाइविंग और स्नॉर्कलिंग के साथ, मालदीव का साफ पानी समुद्री जीवन में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए एक चुंबक समान है।

रेजिडेंस मालदीव विभिन्न प्रकार के समुद्री अनुभव प्रदान करता है, जो उन लोगों के लिए अनुकूल हैं जो पानी के अंदर और बाहरी जीवन से प्यार करते हैं। इस सुंदर द्वीप में सूर्यास्त समय डॉल्फिन भ्रमण और स्कूबा डाइविंग के अनुभवों से लेकर मछली पकड़ने और स्थानीय द्वीप भ्रमण किया जा सकता है। टीम कई अलग-अलग डाइविंग स्तरों को भी समायोजित कर सकती है और उन लोगों के लिए सभी उपकरण प्रदान कर सकती है जो आधिकारिक योग्यता हासिल करना चाहते हैं। डिस्कवर स्कूबा डाइविंग से लेकर डाइव मास्टर तक, टीम कई तरह की विशिष्टताएं प्रदान करती है। इसके अलावा, रेसिडेंस मालदीव में पूरे साल पानी का तापमान 28-30 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहता है, जो गोता लगाने के लिए उपयुक्त है। रिजॉर्ट में ठहरने की जगह से चट्टान में पानी के नीचे की सुंदरता का पता लगाने का विकल्प भी है और एक घंटे के दायरे में कई अद्भुत गोता स्थलों के लिए एक पारंपरिक मालदीवियन नाव की यात्रा भी पर्यटकों के लिए उपलब्ध है।

मंदिरो का भव्य इतिहास

– चेतन वाढेर

रविवलसा गांव श्रीकाकुलम आंध्र प्रदेश

आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम जिले के रविवलसा गांव में यह 20 मीटर ऊंचा और 3 मीटर चौड़ा स्वयंभू शिवलिंग है। इस शिवलिंग की खास बात यह बताई जाती है कि यह शिवलिंग #त्रेतायुग का है। और यह सदियों से बढ़ रहा है।

रसमंच मंदिर बिष्णुपुर, पश्चिम बंगाल 1869 में और अब।

1600 ई. में मल्ल राजा वीर हम्बीर द्वारा निर्मित भारत के सबसे पुराने ईंटों के मंदिरों में से एक। मंदिर में एक पिरामिडनुमा संरचना है और नक्काशी में टेराकोटा का उपयोग किया गया है। रास पूर्णिमा उत्सव के दौरान, शहर के सभी राधा कृष्ण मूर्तियों को नागरिकों द्वारा देखने और पूजा करने के लिए यहां लाया गया था।

प्रीह को, हरिहरलय, कंबोडिया

भगवान शिव को समर्पित इस मंदिर का निर्माण प्राचीन शहर हरिहरलय में खमेर राजा इंद्रवर्मन प्रथम ने 879 ई. में करवाया था।

कंबोडिया कभी हिंदू बहुल देश था।

गोंडेश्वर मंदिर, सिन्नार, महाराष्ट्र

गोंडेश्वर मंदिर महाराष्ट्र के नासिक जिले के सिन्नार में स्थित 11वीं-12वीं शताब्दी का हिंदू मंदिर है। इसमें एक पंचायतन योजना है; शिव को समर्पित एक मुख्य मंदिर के साथ; और सूर्य, विष्णु, पार्वती और गणेश को समर्पित चार सहायक मंदिर है।

राज द्वार मंदिरः

यह अयोध्या के महत्वपूर्ण स्थलों में से एक है, जो हनुमान गढ़ी के पास स्थित है। यह भव्य मंदिर एक उच्च पतला शिखर वाला एक उच्च भूमि पर खड़ा है और दूर से दिखाई देता है। मंदिर भगवान राम को समर्पित है। यह समकालीन वास्तुकला का एक बेहतरीन उदाहरण है।

अमरकंटक मंदिर

3,500 फीट की ऊंचाई पर मैकल पर्वत में स्थित है। यह तीर्थस्थल देश भर के हिंदुओं के लिए एक प्रमुख तीर्थ स्थल है। यह एक सत्य मंदिर है जो छत्तीसगढ़ की घनी पहाड़ियों और जंगलों के बीच स्थित है। यह पवित्र स्थान मध्य भारत की श्रद्धेय नदियों में से एक अर्थात पवित्र नदी नर्मदा और सोन नदी का भी स्रोत है।

पाटन दरबार स्क्वायर

नेपाल में ललितपुर शहर के केंद्र में स्थित है। यह काठमांडू घाटी के तीन दरबार चौकों में से एक है, जो यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल हैं। इसका एक आकर्षण प्राचीन शाही महल है जहाँ ललितपुर के मल्ला राजा रहते थे।

पुलवामा, कश्मीर, में शिव मंदिर

भगवान शिव का यह मंदिर पुलवामा, कश्मीर में बहुत कम जीवित (आंशिक रूप से) मंदिरों में से एक है। इसका निर्माण 500 सीई के आसपास किया गया था, जिसका अर्थ है कि यह लगभग 1500 साल पुराना है!

अफ्रीकी महाद्वीप को एशिया से अलग करने वाली स्वेज नहर की

रोचक कहानी

स्वेज नहर कहाँ है?

193.30 किमी (120 मील) लंबी स्वेज नहर मिस्र में स्थित एक कृत्रिम समुद्र-स्तरीय जलमार्ग है और भूमध्य सागर को लाल सागर की उत्तरी शाखा स्वेज की खाड़ी से जोड़ती है।

आधिकारिक तौर पर नवंबर 1869 में खोला गया, स्वेज नहर दुनिया में सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले शिपिंग मार्गों में से एक है, जो हर साल हजारों जहाजों के पारित होने का साक्षी है। नहर, जो एशिया को अफ्रीकी महाद्वीप से अलग करती है, यूरोप और हिंद महासागर और पश्चिमी प्रशांत महासागर के साथ सीमा साझा करने वाले क्षेत्रों के बीच सबसे छोटा समुद्री मार्ग प्रदान करती है।

नहर पूर्वोत्तर मिस्र में पोर्ट सईद को दक्षिण के स्वेज शहर में पोर्ट तेवफिक से भी जोड़ती है। भूमध्य सागर और लाल सागर के बीच से यूरोप की यात्रा और दक्षिण अटलांटिक और दक्षिणी भारतीय महासागरों की यात्रा में इस नहर के कारण सात हजार किलोमीटर की यात्रा कम हो जाती है।

स्वेज नहर का निर्माण स्वेज नहर कंपनी द्वारा 1859 और 1869 के बीच किया गया था, और स्वेज नहर प्राधिकरण इस जलमार्ग का मालिक है और उसका रखरखाव करता है।

2015 में, मिस्र ने स्वेज नहर का एक बड़ा विस्तार पूरा किया, जिसमें नहर के कुछ हिस्सों को गहरा किया गया और मुख्य जलमार्ग के हिस्से के साथ दूसरी 35 किमी लंबी शिपिंग लेन का निर्माण हुआ।

विस्तार ने नहर के मार्ग को दो-तरफा यातायात और बड़े जहाजों के पारगमन को समायोजित करने की अनुमति दी। दिसंबर 2017 में, दुनिया का सबसे बड़ा कंटेनर जहाज, 400 मीटर लंबा ओओसीएल हांगकांग, 21,400 कंटेनरों को लेकर स्वेज नहर से गुजरा।

सालाना लगभग 8 प्रतिशत वैश्विक

समुद्री व्यापार का साक्षी, ये नहर मिस्र की अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रॉयटर्स के अनुसार, स्वेज नहर ने 2017 में 5.3 बिलियन डॉलर का राजस्व अर्जित किया।

हालाँकि स्वेज नहर 1869 तक औपचारिक रूप से पूरी नहीं हुई थी, लेकिन मिस्र में नील नदी और भूमध्य सागर को लाल सागर से जोड़ने का एक लंबा इतिहास है।

स्वेज नहर का इतिहास लगभग 40 शताब्दियों का है क्योंकि लाल सागर को भूमध्य सागर से जोड़ने का विचार प्राचीन मिस्र के फिरौन के काल में उभरा।

एक नहर की अवधारणा जो इन समुद्रों और नील नदी को जोड़ती है, इस क्षेत्र में पहली नहर के निर्माण तक चली, दोनों समुद्रों को नील नदी के माध्यम से मिस्र के फिरौन (1887-1849 ईसा पूर्व) के सेनासरेट III के शासनकाल में जोड़ा गया। हालांकि, निर्माण के बाद कई वर्षों के दौरान नहर को अक्सर छोड़ दिया गया था। इसी समय इस नहर को कई राजाओ के शासन काल में समुद्री यातायात के उद्देश्य हेतु शुरू किया गया। इनमे प्रमुख रहे सिटी क (1310 ईसा पूर्व), नेचो-II (610 ईसा पूर्व), फारसी राजा डेरियस (522 ईसा पूर्व), सम्राट ट्राजान (117 ईस्वी) और अमरो इब्न इलास (640 ई.)।

ऐतिहासिक दस्तावेजों से पता चलता है कि नहर का विस्तार किया गया था, और इन अवधि के दौरान नई नहरों के निर्माण के कई अन्य प्रयास भी किए गए थे।

नहर बनाने का पहला आधुनिक प्रयास 1700 के दशक के अंत में नेपोलियन बोनापार्ट के मिस्र अभियान के दौरान हुआ था। उनका मानना था कि स्वेज के इस्तमुस पर एक फ्रांसीसी-नियंत्रित नहर का निर्माण अंग्रेजों के लिए व्यापार की समस्या पैदा करेगा क्योंकि उन्हें या तो फ्रांस को देय राशि का भुगतान करना होगा या अफ्रीका के दक्षिणी भाग के आसपास माल भेजना जारी रखना होगा।

नेपोलियन की नहर योजना के लिए अध्ययन 1799 में शुरू हुआ था, लेकिन माप में एक गलती ने भूमध्यसागरीय और लाल समुद्र के बीच इतना अंतर दिखा दिया की निर्माण कार्य को तुरंत रोक दिया गया।

स्वेज नहर का निर्माण आधिकारिक तौर पर 25 अप्रैल, 1859 को शुरू हुआ था। यह अनुमान लगाया गया था कि नहर के निर्माण के लिए कुल 2,613 मिलियन क्यूबिक फीट - भूमि पर 600 मिलियन और ड्रेजिंग के माध्यम से 2,013 मिलियन जमीन के हिस्से को स्थानांतरित करना होगा। इसके अलावा उस समय परियोजना की कुल मूल लागत 200 मिलियन फ्रैंक आंकी गई थी।

भूमध्यसागरीय और लाल सागर को जोड़ने वाली नहर बनाने के निर्णय की ब्रिटेन ने आलोचना की पर इस आलोचना को राजनैतिक माना गया क्युकी इस योजना से समुद्री व्यापार में ब्रिटेन जैसे देश का प्रभुत्व कमजोर हो सकता था।

ब्रिटेन ने इस परियोजना का विरोध करना जारी रखा पर फिर वित्तीय समस्याओं के कारण 1875 में मिस्र सरकार ने अपने शेयरों की नीलामी की और ब्रिटैन ने 44 प्रतिशत हिस्सेदारी खरीदी। इसके बाद यह विरोध समाप्त हुआ।

प्रारंभ में नहर का निर्माण मजबूर मजदूरों द्वारा किया गया था। ऐसा कहा जाता है कि पाशा ने 1863 में जबरन मजदूरी पर प्रतिबंध लगाया, इसके पहले हजारों लोगों को नहर खोदने और फावड़े का उपयोग करने के लिए मजबूर किया गया था।

इसने स्वेज नहर कंपनी को नहर बनाने के लिए कस्टम-निर्मित भाप और कोयले से चलने वाले फावड़े और ड्रेजर लाने के लिए मजबूर किया।

इस मशीनरी की मदद से, परियोजना को आवश्यक बढ़ावा मिला और 17 नवंबर, 1869 को भूमध्य सागर के पानी को नहर के माध्यम से लाल सागर में प्रवाहित करने की अनुमति दी गई। पर किस्सा अभी बाकि है।

हास्यास्पद है सहारनपुर की घटना

किसी मजदूर के लिए उसकी उसका साइकिल ही सब कुछ होता है। तालाबंदी के दौरान मजदूर की ऐसी की तैसी कर दी। खाना पीना रोजगार सबके लाले पड़ गए। कोरोना से क्या होगा पता नहीं पर भुखमरी के कारण जीवन का टिके रहना नामुमकिन सा लगा। सहारनपुर में जो हुआ वह मजाक है या त्रासदी आप सोचे। पंजाब, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा से जो मजदूर धरे गए उनकी साइकिल सहारनपुर में जब्त कर ली गयी। आये कैसे तुम अपनी साइकिल दौड़ा के। मालूम नहीं कोरोना का कीर्तन चल रहा है और भुखमरी का प्रसाद चखो तब तक। सो करीब बीस हजार साइकिल सरकार ने धर लिए। कौन रोकेगा। बाकि सभी को पहले क्वारंटाइन में रखा और बस से घर भेज दिए।

सत्संग भवन में प्रशासन की माने तो १४ हजार साइकिल तो वापस मजदूर ले गए बाकि का क्या करे।

गरीब की साइकिल लिहाजा बेच दो। प्रशासन को २१ लाख की कमाई हुई है। बताइये , क्या क्या बेच के यह अपना गुजरा चला रहे है ?

नागर विमान महानिर्देशालय का फरमान ,

मास्क जरूरी हवाई यात्रा के दौरान

यात्रा आमंत्रण ने जब अधिकारिओ से बात की तो खबर हुई की यह आदेश नागर विमान महानिर्देशालय ने दिल्ली उच्च न्यायालय के कहने पर लिया।

दो साल के बाद भी अभी तक किसी भी संस्था ने यह नहीं बताया है की मास्क पहने से कैसे कोरोना से बचाव होगा।

दरसअल यहाँ कोरोना को लेकर रोज नए सुर बदलते देखे जा सकते है। जब तक टिका नहीं आया था तब तक विज्ञापन में ज्ञान दिए जा रहे थे 'जब तक दवाई नहीं तब तक ढिलाई नहीं ' , फिर दवाई आई तो नया शगूफा छोड़ा ' दवाई भी कड़ाई भी '. टीका को ऐसे दिखाया गया की यह राम बाण साबित होगा। अब यह वापस मास्क पर लौट आये। चलिए इन्हे लगता है की टीका नहीं काम कर रहा है इसलिए मास्क लगा लो। अच्छा फिर यह बताओ की मास्क से कैसे बचाव होगा, उसका कोई जवाब नहीं है इनके पास।

नागर विमान महानिदेर्शालय मास्क के पैरोकारी में ऐसे कूदे की फरमान जारी हो गया की जो यात्री मास्क न पहने उन्हें हवाई जहाज से निचे उतार दो। उसे अनियंत्रित बता के यात्रा से रोक दो। यात्रा आमंत्रण का सवाल , आप बेशक अपनी दादागिरी कर लो और धक्के मार के हवाई जहाज से उतार दो पर जो यात्री है उसे बताओ तो सही की कैसे मास्क से कोरोना का बचाव होता है और फिर वैक्सीन क्यों जबरदस्ती लगाई। हमने सम्बंधित अधिकारिओ से पूछा। वही पुराना किस्सा लेकर बैठ गए की आदेश है , मानना पड़ेगा। इनसे पूछो की मास्क से कैसे कोरोना का बचाव होगा तो साप सुंग जाता है इनको। हम पहले भी बता चुके है की मास्क से फायदा तो कुछ नहीं होता है पर नुक्सान जरूर है। और हम वैज्ञानिक तथ्यो पर कह रहे है जिसमे डॉक्टर बिस्वरूप सर और अधिवक्ता नीलेश ओझा के वैज्ञानिक तर्क सोशल मीडिया पर उपलब्ध है।

विमान से उतारने सम्बंधित कानून में उस आम नागरिक को शामिल किया जा रहा है जो मास्क के जबरदस्ती पर अपनी बात रखना चाहता है पर उसके मौलिक अधिकारों का हनन हो रहा है। उसे नहीं बताया जा रहा है की मास्क से कैसे बचाव होगा क्युकी बता ही नहीं सकते। अब हमे स्वयं ही ऐसे अवैज्ञानिक आदेशों पर सवाल पूछने पड़ेंगे और इनका विरोध भी करना पड़ेगा।

घुटनो पर श्रीलंका का पर्यटन जिम्मेदार कौन ?

आज श्रीलंका अपने सबसे बुरे दौर से गुजर रहा है और इसके कारन वह पर आर्थिक संकट खड़ा हो गया है। इसके पीछे की वजह पर कई जानकारी हमारे समक्ष है। पर इस बार दो बिन्दुओ पर चर्चा करनी है , पहला वर्त्तमान में पर्यटन का आर्थिक हालात और दूसरा श्रीलंका ने अपने पर्यटन के विकास के लिए किस तरह के कदम उठाये।

श्रीलंका में पर्यटन, जो देश का तीसरा सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा अर्जक है, 2019 ईस्टर संडे के आत्मघाती बम विस्फोटों के बाद एक आभासी पड़ाव पर आ गया, जिसमें 250 से अधिक लोग मारे गए थे। इसके बाद पर्यटकों के आगमन में 70% तक की गिरावट आई है।

2018 में 2.3 मिलियन और 2019 में 1.9 मिलियन की तुलना में जनवरी-मार्च 2020 में पर्यटकों की संख्या केवल 507,311 थी ।

श्रीलंका नीति में एक और कमी जटिल पंजीकरण प्रक्रिया है। श्रीलंका पर्यटन विकास प्राधिकरण (SLTDA) की स्थापना उत्पाद के मुख्य कार्यों और पर्यटन व्यवसायों के संबंधित बुनियादी ढांचे के विकास, विनियमन, सुविधा और श्रीलंका को एक पर्यटन स्थल के रूप में बढ़ावा देने के साथ की गई थी। परन्तु पिछले 50 वर्षों में, जटिल प्रक्रियाओं, के कारण केवल 4,237 व्यवसायों को पंजीकृत किया गया है।

और फिर महामारी ने पर्यटन उद्योग को गंभीर झटका दिया। और विदेशी मुद्रा जो देश के आर्थिक राजस्व का सबसे बड़ा स्रोत है, 2021 में 22.7% से गिरकर $5.5 बिलियन हो गया। महामारी के शुरूवात से वर्ल्ड ट्रैवल एंड टूरिज्म काउंसिल के अनुसार, 2 लाख से

अधिक लोगों ने यात्रा और पर्यटन क्षेत्रों में अपनी नौकरी खो दी है।

वर्ष 2018 में पर्यटन से होने वाली कमाई भारतीय रुपये में 44 हजार करोड़ थी जो वर्ष 2021 में 2 हजार करोड़ हो गई है। 2018 में, लगभग 450,000 भारतीय पर्यटकों ने श्रीलंका का दौरा किया। श्रीलंका ने प्राचीन भारतीय महाकाव्य से जुड़े कई स्थानों की पहचान करके भारतीय पर्यटकों को लुभाने के लिए रामायण सर्किट विकसित किया था ।

पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कई कदम कोविद से पहले लिए गए जिनमे प्रमुख है

पर्यटन उद्योग को एक निर्यात उद्योग के रूप में पहचाना गया और उसे वैट छूट प्रदान की गई।

1) प्रत्येक 2026 टूर गाइड को 20 हजार रुपये का भुगतान किया गया और कुल 40.5 मिलियन रुपये खर्च किए गए।

2) पर्यटन सहित प्रभावित उद्योगों के लिए 150 अरब रुपये की ऋण योजनाएँ।

3) 2021 के लिए शराब लाइसेंस शुल्क माफ किया गया

4) होटलों के लिए यूनिट मूल्य सुनिश्चित करने के लिए सीलोन बिजली बोर्ड से समर्थन मांगना।

5) एला और दांबुला में पर्यटन शाखाएं स्थापित करना

6) पर्यटन के लिए लैंड बैंक बनाना। इसका मकसद पर्यटन में निवेश के अवसरों को बढ़ाना है।

4950 पर्यटक स्थलों को लंबी पैदल यात्रा, शिविर, साइकिल चलाना, बुद्ध ट्रेल्स, रामायण ट्रेल्स, वन्यजीव पहचान के लिए चिह्नित किया गया था।

श्रीलंका के लिए अपना पूरा स्वरुप वापस पाना और उसे अर्जित करना एक चुनौती रहेगा और आर्थिक मंडी के बीच विदेशी पर्यटन का बाजार खोलना पहली प्राथमिकता रहेगी। उम्मीद है की श्रीलंका में पर्यटन में खुशहाली लौटेगी और हम वापस रामायण पर्यटन का आनंद ले पाएंगे।

भागलपुर की पहचान है भारत की पहली डॉलफिन वेधशाला

विक्रमशिला गंगा डॉल्फिन अभयारण्य गंगा नदी पर स्थित 50 किलोमीटर क्षेत्र में फैला है। अभयारण्य बिहार राज्य के भागलपुर जिले में स्थित है। विक्रमशिला गंगा डॉल्फिन अभयारण्य को भारत सरकार द्वारा वर्ष 1991 में डॉलफिन नदी के संरक्षण के लिए एक संरक्षित क्षेत्र के रूप में शुरू किया गया था। अभयारण्य में पाई जाने वाली डॉलफिन की प्रजातियों को आईयूसीएन द्वारा वर्ष 2006 में लुप्तप्राय के रूप में वर्गीकृत किया गया था और इसके बचाव के लिए गहन उपाय किए गए हैं। तब से उनके अस्तित्व और पुनः जनसंख्या को सुनिश्चित करने के लिए प्रयत्न किये जा रहे है। विक्रमशिला गंगा डॉल्फिन अभयारण्य पूर्वी भागलपुर में कहलगांव से पश्चिम में सुल्तानगंज तक फैली हुई है। इसके भीतर जलीय प्रजातियों की काफी बड़ी संख्या है । गंगा डॉल्फिन भारत के लिए बहुत महत्व रखती है क्योंकि यह देश का राष्ट्रीय जलीय जानवर है और नदी डॉलफि न की चार प्रजातियों में से एक है। हालांकि, पिछली शताब्दी में, मोटर चालित नौकाओं और मछली पकड़ने सहित विभिन्न मानव निर्मित कारकों के कारण इन जलीय स्वर्गदूतों की आबादी में एक अस्थिर गिरावट देखी गई है। अभयारण्य अपने प्राकृतिक आवास में इन शानदार जीवों के अध्ययन के लिए एक उपयोगी संसाधन के रूप में कार्य करता है।

वातावरण की परिस्थितियाँ

विक्रमशिला गंगा डॉल्फिन अभयारण्य गर्मियों के दौरान गर्म मौसम का अनुभव करता है। मई के महीने में पारा औसतन 32 डिग्री सेल्सियस के आसपास बनी रहती है, जो कि सबसे गर्म महीना है। सर्दियाँ थोड़ी ठंडी और आरामदायक होती हैं। जनवरी के सबसे ठंडे महीने में औसत तापमान 17 डिग्री सेंटीग्रेड के आसपास रहता है। जुलाई की बारिश से मौसम में बदलाव आता है और औसत 249 मिलीमीटर वर्षा के साथ जल स्तर में भी वृद्धि होती है।

अभयारण्य पूरे साल खुला रहता है लेकिन घूमने का सबसे अच्छा समय जून और अक्टूबर के बीच है। कई पक्षियों और समुद्री जीवन के साथ इस समय अधिकांश डॉलफि न को देखा जा सकता है।

विक्रमशिला गंगा डॉल्फिन अभयारण्य में वन्यजीव

विक्रमशिला गंगा डॉल्फिन अभयारण्य में वनस्पतियों और जीवों की विभिन्न जलीय प्रजातियां पाई जाती हैं। डॉलफि न के अलावा, अन्य प्रजातियों में घड़ियाल, इंडियन स्मूथ कोटेड ओटर और कछुए शामिल हैं। क्षेत्र में प्रवासी और आवासीय पक्षियों को भी देखा जा सकता है। नदी के अंदर, मीठे पानी के झींगे, मछली और क्रस्टेशियंस की कई प्रजातियां देखी जा सकती हैं।

निकटतम रेल्वे स्टेशन

विक्रमशिला गंगा डॉल्फिन अभयारण्य का निकटतम रेल्वे स्टेशन भागलपुर में स्थित है। अभयारण्य का प्रवेश द्वार रेल्वे स्टेशन से लगभग 15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और सड़क मार्ग से पहुँचा जा सकता है।

प्रो. सुनील चौधरी
पूर्व प्रमुख, वनस्पति विज्ञान विभाग, और नदी जीवविज्ञानी
टी.एम. भागलपुर

वन्य जीवन अधिनियम के तहत जागिए डॉल्फिन विलुप्त प्रजाति के तौर पर आता है। इसमें २०० के करीब डॉलफिन आज के तारीख में है।

आम बोल चाल की भाषा में इसको सोर्स भी कहते है क्युकी यह थोड़े से समय के लिए ही यह पानी के ऊपर आता है। सांस लेने के लिए और फिर निचे चला जाता है। यहाँ की नदिया चुकी धुंधली है, उसमे कुछ दिखता नहीं है , इसलिए बहुत कम जानकारी लोगो के पास है। लेकिन धीरे धीरे राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय मंच पर इसको लेकर लोगो का ध्यान आकर्षित हुआ। हमारा पहला काम था, लोगो को यह बताना कि जहां दो जून की रोटी नहीं मिल रही थी, वहां सोर्स को बचाना क्यों जरूरी है? क्योंकि सोर्स यानि डॉल्फिन का शिकार होता था और वह शिकार की वजह थी डॉलफिन का तेल। इस तेल की बाजार में बेहद मांग थी। ऐसा माना जाता था की जोड़ो के दर्द में , गठिया रोगो में , तंत्रिका तंत्र विकार में और गर्भवती महिला की डिलीवरी दर्द रहित होता है। अब जानबूझ के मारने की घटना करीब करीब खतम हो चुकी है। चीन के यांग्त्जी नदी की जो डॉल्फिन है बैजी , 2006 में विलुप्त हो गयी। उसके बाद से मीठे नदी के जो डॉलफिन है उस पर पूरी दुनिया का ध्यान आकर्षित है। डॉल्फिन की सुरक्षा केवल डॉल्फिन की सुरक्षा नहीं है , डॉल्फिन की सुरक्षा सूचक है नदी के स्वास्थ का। नदी स्वस्थ होने का मतलब है की नदी में और भी जो जलिये जीव है वह भी मौजूद है। और यह जो विक्रमशिला का खंड आप देख रहे है, उसमे गंगा नदी की जैव विविधता जितनी हुआ करती थी, उसका परिचायक अगर कही है तो वह केवल भागलपुर क्षेत्र में है जो विक्रमशिला अभयारण्य का भाग है। यहाँ पर छह प्रजातियां कछुए की है , ऊदबिलाव है , यहाँ पर दो सौ से अधिक प्रवासी पक्षी है और नब्बे से अधिक मछलियों की प्रजातियां है। यहाँ की जैव विविधता इतनी समृद्ध है की आने वाले पीढ़ी को दिखाना हो अगर की गंगा ऐसी हुआ करती थी तो इस खंड को संग्रक्षित करने की जरूरत है। मछुआरे आश्रित है गंगा पर और डॉलफिन का भोजन मछली है। मछली डॉलफिन को भी चाहिए और मछुआरे को भी चाहिए। बिहार सरकार ने काफी प्रयास किये है , योजना बनाई है, नमामि गंगा प्रोजेक्ट के माध्यम से भी कई कार्यक्रम चलाये जा रहे है।

हमने यहाँ के नाट्य संस्था के जरिये नुक्कड़ नाटक भी किये जिसमे बताया गया की गंगा पहले कैसी थी और लोग और जिव गंगा के किनारे रहने वाले कैसे आनंद में रहते थे। और फिर सब कुछ बदल गया और डॉलफिन खतरे में आ गई। इसका प्रदर्शन मछुआरों के गांव में , अभयारण्य से लगे स्कूलों में और महाविद्यालयों में हुआ। मैं महसूस करता हुं कि नियमित रूप से बच्चों को नदी के किनारे ले जाकर इस बारे में जानकारी दी जाये। जिस से बच्चे नदी को समझ पाए। हमने पैदल गंगा यात्रा की। शुरू में जब विद्यालय में कार्यक्रम हुए तो बच्चों को लगा की यह मछली है। पर आज सत्तर प्रतिशत बच्चो को पता है की यह स्तनधारी जिव है जो हमारी तरह ही है।

घर के भोजन के संग पर्यटन में असीम संभावना

पर्यटन बाजार को बढ़ावा देने के लिए घर में खाना पकाने और भोजन साझा करने की बढ़ती प्रवृत्ति ने एक नए तरह के पर्यटन का मार्ग प्रशस्त किया है। इस नए भोजन पर्यटन से पर्यटकों को घर पर भोजन करने का अवसर मिलता है और वह खाद्य संस्कृति के आसपास की परंपराओं को निकट से अनुभव कर पता है । वैश्वीकरण के बजाय पर्यटक धीरे-धीरे स्थानीयता को अपना रहे हैं। वे स्थानीय उत्पादों की ओर रुख कर रहे हैं जो वैश्विक रुझानों का पालन करने के बजाय उनकी परंपराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

उदाहरण के लिए, ह्ईटविथ,ह्व ने ऑनलाइन प्लेटफॉर्म बनाकर इस प्रवृत्ति को भुनाया है जो यात्रियों को स्थानीय मेजबानों से जोड़ता है और उन्हें भोजन साझा करने, मेजबानों के खेतों का भ्रमण करने और यहां तक कि खाना पकाने के सुझावों का आदान-प्रदान करने की अनुमति देता है। इससे ग्रामीण पर्यटन का एक नया बाज़ार भी खुल रहा है।

अब तो विदेशी पर्यटक पाक कला सीखने की इच्छा जाहिर करते है जिस से कई पेशेवर पाक कला के जानकारों को अपने व्यापार को आगे बढ़ाने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हो रहा है।

पाक कला पर्यटन में पाक कला कक्षाएं अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त कर रही हैं। जहा एक रेस्तरां में खाने से पर्यटकों को केवल स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लेने की अनुमति मिलती है वही दूसरी तरफ घर में भोजन की तैयारी देखने और उसमे भाग लेने के साथ ही साथ उन्हें इस क्षेत्र के गैस्ट्रोनोमी को गहराई से समझने और समझाने की जानकारी मिलती है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भोजन तैयार करने की प्रक्रिया से गुजरने के बाद, पर्यटकों को उन प्रभावों के बारे में जानकारी हासिल करने का अवसर मिलता है, जिन्होंने भोजन को आकार दिया है। इस प्रकार पाक पर्यटन का मार्ग प्रशस्त हुआ।

भारत में पाक पर्यटन बाजार का विस्तार कैसे होगा ?

कई बड़े बाजार के खिलाडी भारतीय संस्कृति को दर्शाती पाक पर्यटन के बाज़ार पर नए मौको की तलाश में है। अनुकूल सरकारी पहल और आवास की आसान उपलब्धता के कारण बड़ी संख्या में पारंपरिक खाद्य आउटलेट, भारत के पाक पर्यटन बाजार में सबसे तेज गति से बढ़ने की दिशा में है।

इसके अलावा, मसालों, करी और विभिन्न स्वादों के साथ भारतीय भोजन को हमेशा से पसंद किया जाता रहा है। यह कला अंतरराष्ट्रीय दर्शकों को भारतीय रसोई की ओर आकर्षित कर रही है। इसके अलावा, पाक पर्यटन बाजार में वृद्धि के प्राथमिक कारणों में से एक भारतीय जीवन शैली, संस्कृति और परंपरा के बारे में अधिक जानने की इच्छा है।

कौन सी गतिविधि पाक पर्यटन बाजार पर हावी होगी ?

'दुनिया भर में खाद्य त्योहारों यानि फूड फेस्टिवल पाक पर्यटन बाजार को लाभान्वित कर रहा है। विविध प्रकार के गतिविधिओ पर आधारित इन फूड फेस्टिवल सेगमेंट ने 2021 में बाजार में महत्वपूर्ण हिस्सेदारी अर्जित की है। इसका श्रेय क्षेत्रीय व्यंजनों, भोजन और पेय खाद्य सामग्री प्रमुखता से यात्रिओ के पसंद में शुमार रहे हैं।

पाक पर्यटन पर वैश्विक रिपोर्ट

संयुक्त राष्ट्र के विश्व पर्यटन संगठन द्वारा प्रकाशित पर्यटन रिपोर्ट से पता चलता है कि एक औसत पर्यटक अपने अवकाश बजट का एक तिहाई भोजन पर खर्च करता है।

2019 में, महामारी की चपेट में आने से पहले, विश्व स्तर पर पाक पर्यटन का मूल्य लगभग 83 लाख करोड़ रुपये था - इसके 2027 तक 16.8 प्रतिशत की सीएजीआर के साथ बढ़ने की उम्मीद है।

कब मिलेगा भारतीय रेलवे में वरिष्ठ नागरिकों को रियायत?

भारतीय रेलवे पर छूट प्रदान किए गए विभिन्न श्रेणी के व्यक्तियों की सूची

भारतीय राष्ट्रीयता के पुरुष - 60 वर्ष और उससे अधिक - साधारण श्रेणी में 40 प्रतिशत

भारतीय राष्ट्रीयता की महिलाएं - 58 वर्ष और उससे अधिक-साधारण श्रेणी में 50 प्रतिशत

किसी भी प्रयोजन के लिए यात्रा करने वाली युद्ध विधवाएं - शयनयान एवं द्वितीय श्रेणी में 75 प्रतिशत

गृह नगर व शैक्षणिक उद्देश्य यात्रा पर जाने वाले छात्र- शयनयान व द्वितीय श्रेणी में 50 प्रतिशत

ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी स्कूल के छात्र वर्ष में एक बार अध्ययन भ्रमण पर- द्वितीय श्रेणी में 75 प्रतिशत

प्रवेश परीक्षा-ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी स्कूल की छात्राएं- द्वितीय श्रेणी में 75 प्रतिशत

राष्ट्रीय एकता शिविरों में भाग लेने वाले युवा - शयनयान और द्वितीय श्रेणी में 50 प्रतिशत

नौकरी के लिए इंटरव्यू देने जा रहे बेरोजगार युवक- शयनयान व द्वितीय श्रेणी में 50 प्रतिशत

किसान एवं औद्योगिक श्रमिक - कृषि मेले में जाने हेतु - शयनयान एवं द्वितीय श्रेणी में 25 प्रतिशत

फिल्म तकनीशियन - फिल्म निर्माण से संबंधित यात्रा के लिए - स्लीपर में 75 प्रतिशत

केंद्र और राज्य सरकार के मुख्यालय से मान्यता प्राप्त प्रेस पत्राचार - सभी श्रेणी के मेल एक्सप्रेस/राजधानी/शताब्दी में 50 प्रतिशत

प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक - शैक्षणिक भ्रमण हेतु - शयनयान एवं द्वितीय श्रेणी में 25 प्रतिशत

Hunza Tea
DRINK TO YOUR HEALTH
Hunza Tea
An Ayurvedic Product
चाय नहीं → हुंजा टी (Hunza Tea)
सेहत के लिए आदत बदलो
Hunza Tea leaves consist of natural ingredients, namely holy basil, mint, cardamom, cinnamon and ginger. These ingredients have never been processed with chemicals, additives or preservatives. This natural drink forms an essential part of the diet of the Hunza people.
An Ayurvedic Product
Hunza Tea™
Halt harmful effects/addiction of tea. Switch to Hunza Tea!
76 Cups of Hunza Health
MRP : 400/
(incl. of all taxes)
76 Cups of Hunza Health
Buy online at www.biswaroop.com/shop | Call: +91-9312286540

इजारा

महिलाओ द्वारा संचालित भोजनालय

— OUR PRESENCE —

Mumbai | Delhi | Dehradun
Valsad | Amravati | Lucknow
Thane | Dist Palghar | Prayagraj
Chennai

हम है इजारा,
हमारे साथ कीजीये स्वाद से परिचय

BOLLYWOOD
FIRST ALL
WOMEN
CATERING SERVICE

A project to empower underprivileged WOMEN

A social cause Initiative by
Will India Change Foundation

WILL INDIA CHANGE FOUNDATION

Visit us at
www.willindiachange.org

• CONTACT US •

Project Head/Catering	Project Head/New Mumbai	Project Coordinator/Vidarbha Region
SUHASINI SAKIR	**BIDDISHA MUKHOPADHYA**	**MADHURI SUDHA**
+91 77589 68909	+91 98690 51721	+91 93716 71707

For any kind of query whats app at +91 99712 29644

ADDRESS : B 121, 2nd Floor, Green Field Colony, Faridabad, Haryana 121001